

---

# shAstuH dhyAnAShTakaM

शुस्तु: धुनलशुतु

## Document Information

---

Text title : shAstuHdhyAnAShTakam

File name : shAstuHdhyAnAShTakam.itx

Category : deities\_misc, ayyappa, aShTaka, dhyAnam

Location : doc\_deities\_misc

Transliterated by : PSA Easwaran

Proofread by : PSA Easwaran, Sunder Hattangadi

Description/comments : From Shastrarchana, Kannada publication

Latest update : July 10, 2021

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

शास्तुः ध्यानाष्टकम्



श्रीगणेशाय नमः ।

नमामि धर्मशास्तरं योगपीठस्थितं विभुम् ।

प्रसन्नं निर्मलं शान्तं सत्यधर्मप्रतं भजे ॥ १ ॥

आश्यामकोमलविशालतनुं विचित्र-

वासो वसानमरुणोत्पलवामउस्तम् ।

उत्तुङ्गरत्नमुकुटं कुटिलाग्रकेशं

शास्तारमिष्टवरदं शरणां प्रपद्ये ॥ २ ॥

उरिउरशरीरजन्मा मरकतमणिभङ्गमेयकच्छायः ।

विजयतु देवः शास्ता सकलजगच्छिक्तमोहिनीमूर्तिः ॥ ३ ॥

पार्श्वस्थापत्यदारं वटविटपितलन्यस्तसिंहासनस्थम् ।

श्यामं कालाम्बरं च श्रितकरयुगलादृशचिन्तामणिं च ।

शस्त्री निस्त्रिंशद्भाषासनविशिषधृतं रक्तमाल्यानुलेपं

वन्दे शास्तारमीज्यं धनकुटिलभृङ्कुन्तलोदग्रमौलिम् ॥ ४ ॥

स्निग्धाराविसारिकुन्तलभरं सिंहासनाध्यासिनं

स्कूर्जत्यत्रसुकुम्कुण्डलमथेष्विष्यासभृद्दोर्द्रयम् ।

नीलक्षौमवसं नवीनजलदृश्यामं प्रभासत्यक-

स्वायत्पार्श्वयुगं सुरक्तसकलाकल्पं स्मरेदार्यकम् ॥ ५ ॥

कोदण्डं सशरं भुजेन भुजगेन्द्राभोगभासा वडन्

वामेन क्षुरिकां विपक्षदलने पक्षेण दक्षेण च ।

कान्त्या निर्जितनीरदः पुरभिदः क्रीडतिराताकृतेः

पुत्रोऽस्माकमनल्पनिर्मलयशाः निर्मातु शर्मानिशम् ॥ ६ ॥

काणाम्भोदकलाभकोमलतनुं आलेन्दुयूयं विभुं

आलाकयितरोयिषं शरलसत्कीदण्डभाषान्वितम् ।

वीरश्रीरमणं रणोत्सुकमिषद्रक्ताम्बुलूषाञ्जलिं  
कालारातिसुतं किरातवपुषं वन्दे परं दैवतम् ॥ ७ ॥

साध्यं स्वपार्श्वेन विबुद्ध्य गाढे  
निपातयन्तं भलु साधकस्य ।  
पादाब्जयोर्मण्डधरं त्रिनेत्रं  
भजेम शास्तारमलीष्टसिद्ध्ये ॥ ८ ॥

॥ इति शास्तुः ध्यानाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by PSA Easwaran

Appreciation : Mrs. Chandra V. Ramani and Sri TB Lakshmana Rao Guruji

---

*shAstuH dhyAnAShTakaM*

pdf was typeset on September 16, 2023

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

